

## देसी गर्ल: कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत-2

“अनजान शहर में किसी भी परिचित देसी गर्ल की पैंटी उतरवा कर उसकी टाँगें उठवा देना इतना आसान नहीं होता चाहे वो कितनी भी चुदासी, लंड की प्यासी और चुदने को पूरी तरह तैयार ही क्यों न हो. ...”

Story By: Sukant Sharma (sukant7up)

Posted: Wednesday, October 31st, 2018

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [देसी गर्ल: कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत-2](#)

## देसी गर्ल: कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत-2

देसी गर्ल कम्मो मजे से वो सब नंगे फोटो और चुदाई के वीडियो देखती रही. फिर उसने मेरे मोबाइल में देखते हुए अपनी टांगों के बीच हाथ ले जाकर जल्दी जल्दी कहीं खुजाया और कुछ देर अपना हाथ वहीं रखे रही ; मैं समझ गया कि वो अपनी चूत का दाना मसल रही थी.

कोई पंद्रह मिनट तक हो यूं ही मेरा फोन खंगालती रही. फिर उसने फोन वहीं सीट पर रख दिया और सामने वाली सीट से सिर टिका कर आँखें मूंद कर गहरी गहरी सांस लेने लगी. सांस के उतार चढ़ाव के साथ उसके बूब्स भी जैसे उठ बैठ रहे थे. उसकी चूत भी जरूर पक्का गीली हो चुकी होगी.

फिर थोड़ी देर बाद ...

“क्या हुआ कम्मो नींद आ रही है तुझे ?” मैंने उसे कहा.

“नहीं तो. मैं बस ऐसे ही ऊँघ रही थी.” वो बोली और सीधी बैठ गयी.

मैंने देखा उसका गुलाबी चेहरा और भी गहरा गुलाबी हो उठा था. उसकी आँखों में लाली तैर रही थी जैसे नशे में हो और चेहरे पर जैसे हवाइयां सीं उड़ रहीं थीं. ये सब लक्षण इस बात के परिचायक थे कि उसकी गीली चूत बुरी तरह फड़क रही थी, वो वासना की आग में झुलस रही थी. चुदवाने की लालसा उसके चेहरे पर स्पष्ट झलक रही थी. मैं जैसा चाहता था ठीक वैसा ही असर हुआ था उस पर. मैं जिस मुकाम पर उसे लाना चाहता था वो आ चुकी थी. आग लग चुकी थी उसकी टांगों के बीच में. अब आगे के हालात मुझे बड़े चातुर्य से सम्भालने थे. अनजान शहर में किसी भी परिचित जवान लड़की या महिला की पैंटी

उतरवा कर उसकी टाँगें उठवा देना इतना आसान भी नहीं होता चाहे वो कितनी भी चुदासी लंड की प्यासी और चुदने को पूरी तरह तैयार ही क्यों न हो.

हर लड़की या औरत पहले सुरक्षित माहौल चाहती है. अतः मैंने सोच लिया कि मुझे बहुत ही सावधानी से आगे बढ़ना है. एक तो दिल्ली जैसा अनजाना शहर, राजधानी है देश की ; जहां कदम कदम पर सी सी टीवी कैमरे लगे हैं. कोई लफड़ा हो गया तो कौन संभालेगा. और मान लो अगर कम्मो चुदने को राजी है भी तो मैं उसे चोदूंगा कहां ?

किसी होटल में जाना भी खतरे से खाली नहीं है. एक तो देसी गर्ल कम्मो की वेश भूषा उसका बोल चाल, उसकी बाँडी लैंग्वेज ... बात करने का तरीका एकदम देहाती स्टाइल वाला है तो ऐसी लड़की का मेरे साथ होटल में जाना लोगों को अटपटा लगेगा और खटकेगा ही, फिर सबसे बड़ी बात हमारे पास कोई सूटकेस या अन्य कोई सामान भी नहीं है. यूँ खाली हाथ मुंह उठाये किसी होटल में चेक इन करना अपनी मुसीबत बुलाने जैसा ही है, अगर बात बिगड़ गयी तो मैं तो कुछ कर नहीं पाऊंगा और कई लोग मिल कर कम्मो को जरूर नोंच डालेंगे. हो सकता है पुलिस केस भी बन जाए और शाम की ब्रेकिंग न्यूज़ में मैं सुर्खियों में आ जाऊँ ; दिल्ली तो वैसे ही देह शोषणकर्ताओं से भरी पड़ी है.

नहीं नहीं ... मैं कम्मो पर कोई आंच आने नहीं दे सकता. लड़की जात है, सफ़ेद बेदाग़ कोरी चादर जैसी होती है जरा सा दाग़ लग जाए तो फिर जिंदगी भर पीछा नहीं छोड़ता. ऐसे सोचते सोचते मुझे उस निर्भया का केस याद हो आया और मुझे पसीना आ गया. फिर सोचा कि दिल्ली में ऐसे होटल भी जरूर होंगे जहां लोग लड़की लेके जाते होंगे घंटे दो घंटे के लिए पर मुझे वो सब नहीं पता था. मतलब होटल में जाने का ऑप्शन किसी काम का नहीं.

तो फिर ऐसे में और क्या ऑप्शन हो सकता है ? सबसे बड़ी बात कि मेरे पास और रुकने का टाइम भी नहीं है, आज रात में शादी है और कल शाम को मेरा वापिस घर अकेले जाने का

तय था, ट्रेन की कन्फर्म टिकट जो थी. मेरी बहूरानी अदिति को तो अभी कुछ दिन रुक कर अपनी नयी भाभी के साथ कुछ दिन बिता कर बाद में फ्लाइट से वापिस बंगलौर जाना था.

तो क्या मैं अपना जाना कैंसिल करके अदिति बहूरानी की हेल्प लूं कम्मो को चोदने में ? वही कोई जुगाड़ फिट कर सकती थी धर्मशाला में ... पर क्या बहूरानी तैयार होगी इसके लिए ?

नहीं, वो कभी नहीं राजी होगी ऐसा काम करवाने के लिए. मैं खूब समझता हूं अपनी बहू के नेचर को. हमारे बीच जो अनैतिक सम्बन्ध परिस्थितिवश बने वो अलग बात है पर मैं अच्छे से जानता हूं मेरी बहू कोई बिगड़ी या बदचलन नहीं है जो मुझे कोई लड़की पटा के सौंप दे और चुदाई की व्यवस्था भी बना दे.

और मैं किस मुंह से बहू से कहूंगा कि मुझे उसकी भतीजी कम्मो की चूत मारनी है तू जगह का इंतजाम कर दे ? नहीं ... मैं ऐसी ओछी और घटिया बात अपने मुंह से कभी नहीं निकाल सकता ; अगर कह भी दिया तो एक तो बहू कभी मानने वाली नहीं है दूसरे मैं उसकी नज़रों से और हमेशा के लिए गिर जाऊंगा और जो उसकी चूत का सहारा अभी है वो भी छिन जाएगा मुझसे.

अब या तो जो कुछ करना है अपने बलबूते पर करना है या नहीं ... और फिर अभी कम्मो ही कौन से तैयार हो गयी है चुदने के लिए !

ऐसी ऐसी बातें सोचते सोचते मेरा दिमाग भन्ना गया. अन्त में तय किया कि कम्मो की चुदाई कैंसिल. मैं कोई रिस्क नहीं ले सकता. हां इतना जरूर करूंगा कि कहीं कोई मौका देख कर चूमा चाटी हो जाय और कम्मो के मम्मों दबाने सहलाने को मिल जायें बस. वो कहते हैं न कि भागते भूत की लंगोटी भी बहुत होती है.

“अंकल जी, कहां खोये हुए हो इतनी देर से ?” कम्मो ने बोलते हुए मुझे कंधे से हिलाया. “हैं ... अरे कुछ नहीं. ऐसे ही घर के बारे में सोच रहा था. तेरी दादी वहां अकेली है न !” मैंने

कहा.

“क्या अंकल जी आप भी ... उन्हें दादी मत कहिये. रिश्ते से दादी होंगी पर अभी ऐसी उमर नहीं आप लोगों की. मैं तो आंटी कह के बुलाऊंगी उन्हें !” वो चहक कर बोली.  
“अच्छा जैसी तेरी मर्जी. तू तो प्यारी प्यारी गुड़िया है न मेरी !” मैंने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और वो मेरे कंधे से आ लगी और अपने हाथ से मेरी छाती सहलाने लगी.  
प्रत्युत्तर में मैं उसकी पीठ सहलाने लगा और उसकी ब्रा के स्ट्रेप्स से खेलने लगा. उसने कोई प्रतिवाद नहीं किया.

हमारी टैक्सी लाल किले के निकट पहुंच रही थी ; किले की गुम्बदें साफ़ दिखाई देने लगीं थीं इधर कम्मो की जांघों के बीच छुपा लालकिला भी मुझे ही पुकार रहा था जिस पर मुझे चढ़ाई करके जीतना था पर सुरक्षित जगह की वजह से पता नहीं जीत भी पाऊंगा या नहीं.

टैक्सी से उतर कर हम लाल किले के सामने जा खड़े हुए. कम्मो तो अवाक् सी उसे देखती रह गयी.

“हाय दैय्या ... अंकल जी ये तो बहुत बड़ा है.” कम्मो बालसुलभ आश्चर्य से बोली.

“हां कम्मो बेटा ... चलो देखते हैं भीतर से !” मैंने कहा.

लाल किले पहुंच कर हमने पूरा किला घूम डाला. घूमते घूमते थकावट भी होने लगी थी. वहां एक बड़े से हाल में, जिसे शायद दीवाने आम या दीवाने खास कहते होंगे, एक बड़ा से तख्त जिस पर पीतल की नक्काशी थी उसे देख कर कम्मो उसी पर जा बैठी.

“अंकल जी, थक गयी मैं तो. दो मिनट बैठ लूं फिर चलते हैं.” कम्मो बोली और अपनी चप्पल उतार कर पांव ऊपर कर के पालथी मार के बैठ गयी.

“अरे, ये शाहजहाँ का तख्त है. उस पर बैठना मना है ; अरे मत बैठो अभी कोई टोक देगा आकर !” मैंने कम्मो को मना किया.

“अंकल जी तखत खाली ही तो पड़ा है, जब शाहजहाँ जी आयेंगे तो मैं उठ जाऊँगी पक्का, चलते चलते पांव दुःख गये मेरे तो अभी दो मिनट आराम कर लूँ बस !” वो बड़ी मासूमियत से बोली.

उसकी बात सुनकर मुझे हंसी आ गयी. सोचा कि ये कौन सी किसी शहजादी से कम है.

लाकिला देखने वालों की काफी भीड़ थी उस दिन. देसी विदेशी सब तरह के लोगों के झुंड के झुंड इस प्राचीन धरोहर को निहार रहे थे. तभी एक विदेशी लड़की हमारी ओर आती दिखी. देखने में 25-26 की लगती थी, उसका टॉप इतना ढीला था की उसकी पूरी छातियां दिख रहीं थीं ; उसके मम्मों के चूचुक जैसे तैसे छुपे हुए थे बस और उसका स्किन कलर का लोअर बेहद पतले कपड़े का था जो उसके जिस्म से चिपका हुआ था और उसमें से उसकी जांघों के बीच फूला फूला सा वो त्रिभुज और बीच की लकीर जिसे पोर्न की भाषा में कैमल-टो कहते हैं, कहर ढाने वाले अंदाज़ में दिख रही थी. अगर गौर से देखो तो उसकी चूत का दाना भी उसकी खुली दरार से नज़र आ ही जाता. इन पश्चिमी देशों के ठन्डे देशों की औरतों की चूत वैसे भी काफी लम्बी, मोटी और खूब गहरी होती है जैसा हमने पोर्न फिल्मों में देखा ही है. पर वो इन सबसे बेखबर अपनी ही धुन में मगन चलती हुई निकल गयी.

मैंने देखा कम्मो की नज़र भी उसकी विदेशी बाला की चूत पर ही जमीं थी. मैंने उसकी ओर देखा तो उसने हंस कर अपना मुंह उस तरफ फेर लिया.

“क्या हुआ री कम्मो, तू हंस क्यों रही है उस बेचारी को देख के ?”

“अच्छा बड़ी बेचारी लग रही है वो आपको ; मैं तो न देख रही थी उसे. मैं तो जे देख री थी की आप कैसे लट्टू हुए जा रहे हो उसे देख देख के !” कम्मो ने मुझे उलाहना सा दिया.

“अरे मैं क्यों लट्टू होऊंगा उसे देख के. तू जो है मेरे साथ !” मैंने हिम्मत करके कह दिया.

मेरी बात का अर्थ समझ के कम्मो का मुंह शर्म से लाल पड़ गया उसने अपना निचला होंठ दांतों से दबा कर हंसती हुई आँखों से मुझे देखा पर कहा कुछ नहीं.

मेरे लिए यह अच्छा संकेत था कि मैं सही जा रहा था.

वहां से निकल कर हम लोग मीना बाज़ार की रौनक देखने लगे. मीना बाज़ार तो एक तरह से इन छोरियों के मतलब का ही है, इन्हीं के साज सिंगार का सामान बिकता है वहां. कम्मो का वहां खूब मन लगा. उसने कुछ खरीदारी भी की और खुश हो गयी.

लालकिले से बाहर आये तो एक बज चुका था और हमें हल्की हल्की भूख भी लग आई थी. “चलो कम्मो अब खाना खा लेते हैं, बताओ क्या खाओगी ?”  
“अंकल जी, मैंने कहा था न अभी आपसे कि मुझे तो डोसा इडली खाने का मन है. यहां कहीं मिले तो वही खाना है मुझे !”

“ठीक है गुड़िया, चलो चांदनी चौक चलते हैं वहीं खायेंगे” मैंने कहा और हम लोग चल पड़े.

डोसा इडली वगैरह साउथ इंडियन फूड खाने की मेरी पसंदीदा जगह तो वैसे इंडियन कॉफ़ी हाउस है ; क्योंकि वहां जैसा स्वाद कहीं और मिलता ही नहीं है. कारण है कि जिसके देस का खाना हो उसी के हाथ का बना अच्छा लगता है. यूं तो उत्तर भारत में साउथ इंडियन खाने के तमाम रेस्टोरेंट्स हैं पर वो स्वाद आ ही नहीं पाता. लगभग हर बड़े शहर में इंडियन कॉफ़ी हाउस की शाखाएं हैं. यहां दिल्ली में भी कई ब्रांचेज होंगी पर वो सब देखने ढूँढने का समय नहीं था हमारे पास.

“अंकल जी, एक बात कहूं ?” कम्मो चलते चलते बोली.

“हां हां कहो बेटा क्या बात है ?”

“अंकल जी, पहले हम लोग फोन खरीद लेते हैं. खाना उसके बाद खा लेंगे” कम्मो थोड़ी व्यग्रता से बोली. मैं कम्मो के मन की व्यग्रता और चाह समझ रहा था. उसका मन तो फोन में ही अटका था. सही भी था वो अपने फोन लेने, देखने, छूने, महसूस करने की जल्दबाजी स्वाभाविक भी थी.

“ठीक है कम्मो. चलो पहले फोन ही लेते हैं” मैंने कहा.

मैंने वहीं पास की दूकान से फोन की दुकानों की जानकारी ले ली ; पास में ही कई दुकानें थीं. वहीं एक मोबाइल स्टोर में हमलोग जा पहुंचे. उनके शो केस में तमाम फोन लगे थे.

मैंने कम्मो से कह दिया कि कोई भी फोन पसंद कर ले.

“अंकल जी, फोन बाहर से देखने से क्या ; इनके अन्दर क्या अच्छा है क्या बुरा है, कौन सा लेना ठीक रहेगा ये तो आप ही समझ सकते हो.” वो बोली.

बात तो सही थी कम्मो की. फोन्स की टेक्निकल बातें वो क्या जाने. मैंने इस बारे में दुकानदार से बात की तो उसने लेटेस्ट फोन्स के रिव्यू मुझे नेट पर पढ़ने की सलाह दी. तो मैंने वहीं बैठ कर अपने फोन से तमाम फोन्स के रिव्यू चेक किये. मैंने दो तीन फोन सिलेक्ट करके उन्हें नेट पर कम्पेयर करके देखा. कम्मो के हिसाब से मुझे मोटोरोला का जी फाइव ज्यादा अच्छा लगा, बारह हजार के करीब कीमत थी. मैंने दुकानदार से वही दिखाने को कहा. दुकानदार ने मोटो जी5 का सेट शो केस से निकाल कर हमें दे दिया.

“देख कम्मो ये वाला ले ले अच्छा रहेगा तेरे लिए !” मैंने कहा. तो कम्मो ने मेरे हाथ से फोन ले लिया और उस पर हाथ फिरा कर उलट पलट कर देखा.

“अंकल जी कितने का है ये ?” कम्मो ने पूछा.

“बारह हजार के आस पास है. लेकिन तू पैसे की चिंता मत कर !” मैंने कहा

“नहीं अंकल जी. मुझे तो जो फोन मेरे आठ हजार में आ जाए वही दिलवा दो आप तो !” वो जोर देकर बोली.

“अरे बेटा फोन तो दो हजार में भी मिल जाएगा. पर तू पैसे की मत सोच. मैं भी तो तेरा कुछ लगता हूं कि नहीं ?” मैंने उसे ऐसे तरह तरह से समझाया.

अन्त में कम्मो झिझकते हुए मान गयी और उसने डार्क ब्राउन कलर का फोन सेलेक्ट कर लिया. मैंने दुकानदार से फोन का सील्ड पैकेट मांगा तो उसने भीतर से लाकर दे दिया. मैंने अपने फोन से पेमेंट कर दिया और बिल कमलेश के नाम से बनवा दिया. इसके बाद वहीं

पास के जियो सेंटर से मैंने जियो की नयी सिम भी अपने आधार कार्ड से ले कर एक्टिवेट करवा कर ले ली. उम्मीद थी की थोड़ी देर में सिम चालू हो जायेगी.

“अंकल जी, चलो अब खाना खाते हैं. जोरों की भूख लग गयी अब तो !” कम्मो बोली.

“ओके बेटा चलो !” मैंने कहा.

हम लोग आगे चांदनी चौक में चल रहे थे. रास्ते में किसी से मैंने पूछा तो उन्होंने मुझे साउथ इंडियन फूड के एक अच्छे रेस्तरां का रास्ता समझा दिया.

वहां पहुंच कर हम दोनों एक फॅमिली केबिन में जा बैठे और मीनू कार्ड देखकर, कम्मो से पूछ पूछ कर खाने का आर्डर कर दिया.

“सर बीस पच्चीस मिनट लगेंगे आर्डर लाने में !” वेटर बोला.

“ओके ठीक है !” मैंने कहा.

वेटर के जाते ही मैंने केबिन का मुआयना किया. वहां एक अच्छे किस्म का सोफा डला हुआ था सामने कांच की सुन्दर मेज थी जिस पर प्लास्टिक के फूलों से सजा गुलदस्ता रखा था. रौशनी की लिए अच्छे डेकोरेटिव वाल लैम्प्स लगे थे जो पर्याप्त रोशनी बिखेर रहे थे. मैंने खूब बारीकी से चेक किया केबिन में कोई भी सीसीटीवी कैमरा नहीं था ; केबिन का दरवाजा भी ठीक ठाक था ; कहने का मतलब वहां पूरी प्राइवैसी थी. एसी की कूलिंग भी बढ़िया थी. हम लोग धूप में चल कर आये थे तो एसी कुछ ज्यादा ही सुखद लग रहा था.

अब मैं और देसी गर्ल कम्मो अगल बगल में सट कर बैठे थे. फोन लेकर कम्मो बहुत खुश नजर आ रही थी.

“अब तो खुश न ?” मैंने उससे कहा.

“हां अंकल जी. थैंक यू” वो हंस कर बोली.

“सिर्फ थैंक यू ? कंजूस कहीं की !” मैंने कहा.

“फिर ?”

“अरे एक चुम्मी ही दे देतीं कम से कम !” मैंने तपाक से कहा.

देसी गर्ल के साथ सेक्स की कहानी जारी रहेगी.

sukant7up@gmail.com

## Other stories you may be interested in

### मेरी कमसिन जवानी की आग-2

मैं बहुत डर गई और घबराने लगी, मैंने भी जल्दी से अपने कपड़े पहने और खड़ी हुई, अंकित से बोली- प्लीज़ मुझे बचा लो! ऐसे हम दोनों को टायलेट में अंदर देख लेंगे तो मैं किसी को मुंह दिखाने लायक [...]

[Full Story >>>](#)

### जवान लड़की : कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत-1

अन्तर्वासना की मेरी प्रिय पाठिकाओ और पाठको, यह कहानी है गाँव की एक जवान लड़की की... वो मुझे एक शादी के कार्यक्रम में मिली थी. मैं उसकी अनगढ़ अल्हड़ जवानी को चखना चाहता था. मेरी पिछली कहानी बहुरानी के मायके [...]

[Full Story >>>](#)

### पति पत्नी और औलाद का सुख

मेरा नाम कोमल है और मेरी उम्र 30 साल है। मैं एक कंपनी में बहुत अच्छी नौकरी करती हूँ। मेरे पिता कुछ समय पहले तक इसी कंपनी में महाप्रबंधक थे जिसकी वजह से मुझे नौकरी ढूँढने में कोई परेशानी नहीं [...]

[Full Story >>>](#)

### भाई के साथ मस्ती

नमस्कार दोस्तो, मैं रागिनी सिंह हाजिर हूँ आपके सामने अपनी पहली कहानी लेकर, अन्तर्वासना पर यह मेरी पहली कहानी है जिसमें आपको भरपूर मज़ा मिलने वाला है। यह कोई कहानी नहीं बल्कि एक सच्चाई है जो की मेरे बारे में [...]

[Full Story >>>](#)

### हिंदी सेक्स स्टोरी पढ़वा कर लड़की पटाई

हिंदी सेक्स कहानी पढ़ने वाले मेरे प्यारे दोस्तो, मेरा नाम आकाश पांडे है. मैं मध्य प्रदेश के रीवा से हूँ. यह मेरी पहली कहानी है. मेरी यह कहानी एकदम रियल है. आज से एक महीने पहले की बात है, उसे [...]

[Full Story >>>](#)

